ऊँ गं गणपतये नमः

शुभ लाभ

जन्मपत्रिका

Hritik Roshan

Hritik Roshan(Year 2015-2016)

Model: 3platinum-varshphal

SrNo: 101-102-101-1335 / 697 Date: 20-01-2015

पुल्लिंग	लिंग	पुल्लिंग
10/01/1974	जन्म तिथि	**10-11/01/2015**
गुरुवार	दिन	शनि–रविवार
घंटे 12:00:00	जन्म समय	00:24:54 घंटे
घटी 11:51:07	जन्म समय(घटी)	42:53:22 घटी
India	देश	India
Mumbai	स्थान	Mumbai
उत्तर 18:58:00	अक्षांश	18:58:00 उत्तर
पूर्व 72:50:00	रेखांश	72:50:00 पूर्व
पूर्व 82:30:00	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:38:40	स्थानिक संस्कार	-00:38:40 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:15:33	सूर्योदय	07:15:33
18:16:03	सूर्यास्त	18:16:44
23:29:58	चित्रपक्षीय अयनांश	24:04:06
मीन	लग्न	कन्या
गुरु	लग्न लग्नाधिपति	बुध
कर्क	राशि	सिंह
चन्द्र	राशि–स्वामी	सूर्य
आश्लेषा	नक्षत्र	उ0फाल्गुनी
बुध	नक्षत्र स्वामी	सूर्य
2	चरण	**1**
प्रीति	योग	शोभन
वणिज	करण	गर
डू–दुर्जय	जन्म नामाक्षर	टे–तेजिका
मकर	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर
विप्र	वर्ण	क्षत्रिय
जलचर	वश्य	वनचर
मार्जार	योनि	गौ
राक्षस	गण	मनुष्य
अन्त्य	नाड़ी	आद्य
श्वान	वर्ग	श्वान
41	गत / तत्कालिक वर्ष	**42**

Hritik Roshan(Year 2015-2016)

जन्म – विवरण

नक्षत्र	पद	अंश	राशि	व	अ
रेवती	1	18:55:35	मीन		
पूर्वाषाढ़ा	4	26:08:06	धनु		
आश्लेषा	2	20:53:31	कर्क		
अश्विनी	4	12:37:35	मेष		
उत्तराषाढ़ा	1	26:42:18	धनु		अ
श्रवण	4	22:58:23	मक		
श्रवण	3	16:50:31	मक	व	
मृगशिरा	4	06:19:01	मिथु	व	
मूल	2	05:00:22	धनु	व	
मृगशिरा	4	05:00:22	मिथु	व	
चित्रा	4	04:03:29	तुला		

वर्ष – विवरण

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	पद	नक्षत्र
लग्न			कन्या	21:34:42	4	हस्त
सूर्य			धनु	26:08:06	4	पूर्वाषाढ़ा
चंद्र			सिंह	27:33:08	1	उ0फाल्गुनी
मंग			कुंभ	04:38:45	4	धनिष्ठा
बुध			मक	14:18:09	2	श्रवण
गुरु	व		कर्क	26:50:31	4	आश्लेषा
शुक्र			मक	14:54:28	2	श्रवण
शनि			वृश्चि	07:44:36	2	अनुराधा
राहु	व		कन्या	19:39:51	3	हस्त
केतु	व		मीन	19:39:51	1	रेवती
मु			सिंह	18:55:35	2	पू0फाल्गुनी

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:04:06

लग्न–चलित

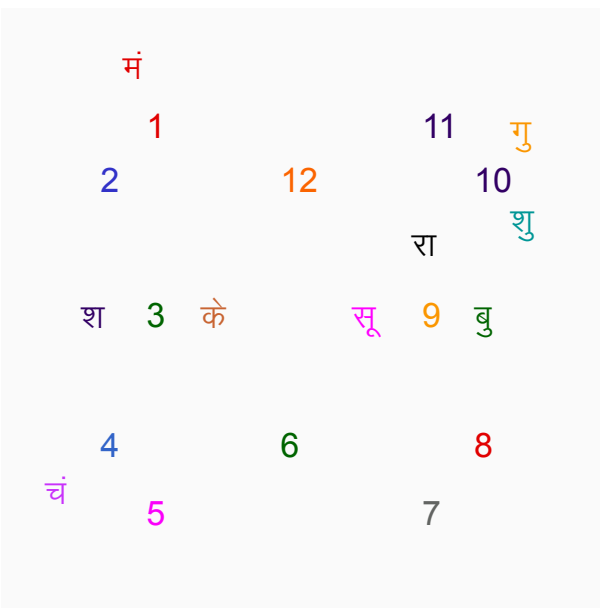

वर्ष फलित लग्न कुंडली

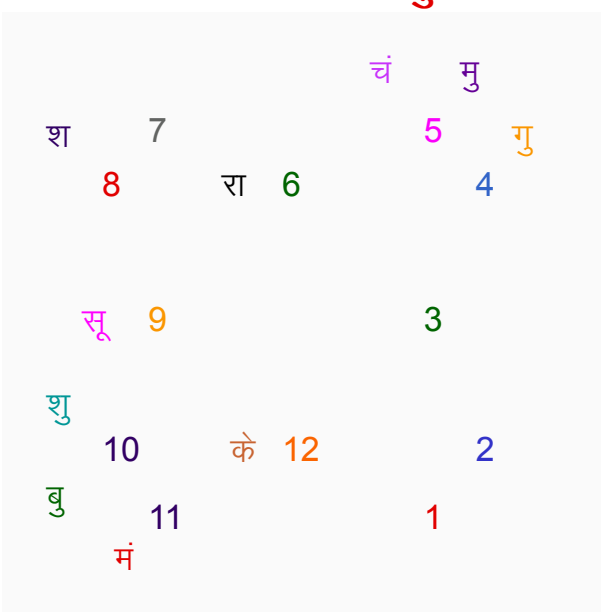

Hritik Roshan(Year 2015-2016)

चन्द्र कुंडली

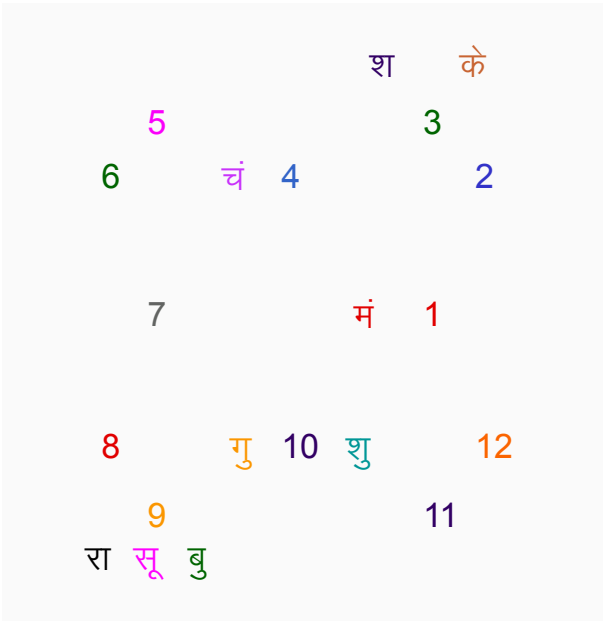

वर्ष फलित चन्द्र कुंडली

नवमांश कुंडली

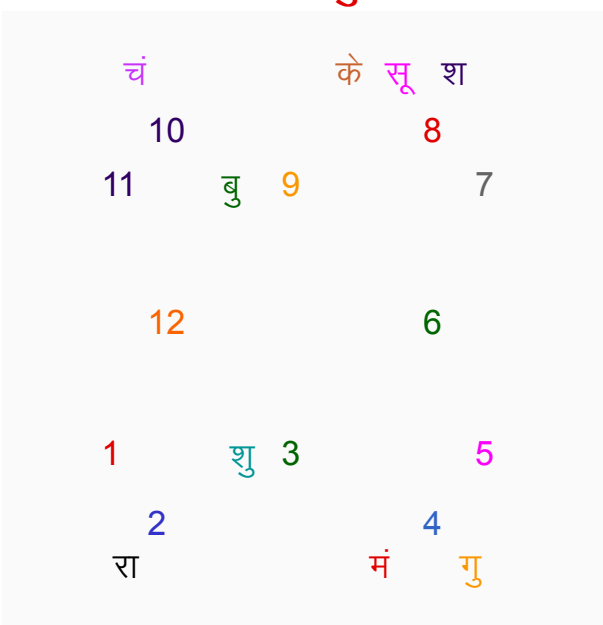

वर्ष फलित नवमांश कुंडली

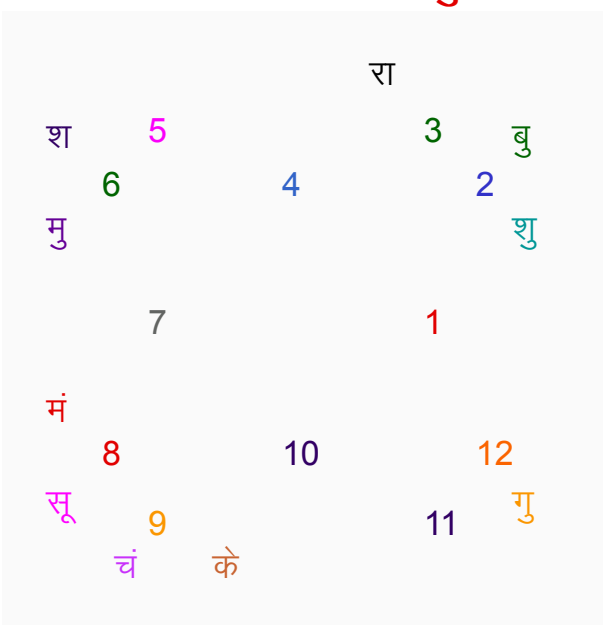

मैत्री सारिणी

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	————	मित्र	मित्र	सम	सम	सम	सम
चन्द्र	मित्र	————	शत्रु	सम	सम	सम	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	————	सम	सम	सम	शत्रु
बुध	सम	सम	सम	————	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	सम	सम	सम	शत्रु	————	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु	————	मित्र
शनि	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	————

द्वादशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि	कन्या	धनु	सिंह	कुंभ	मक	कर्क	मक	वृश्चि
होरा	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	कन्या	कुंभ	मेष	तुला	वृश्चि	कर्क	वृश्चि	वृश्चि
चतुर्थांश	मीन	कन्या	वृष	कुंभ	मेष	मेष	मेष	कुंभ
पंचमांश	मक	तुला	तुला	मेष	मीन	वृश्चि	मीन	कन्या
षष्ठांश	कुंभ	कन्या	कन्या	मेष	धनु	मीन	धनु	वृश्चि
सप्तमांश	सिंह	मिथु	कुंभ	मीन	तुला	कर्क	तुला	मिथु
अष्टमांश	तुला	वृश्चि	मीन	कन्या	कर्क	वृश्चि	कर्क	तुला
नवमांश	कर्क	वृश्चि	धनु	वृश्चि	वृष	मीन	वृष	कन्या
दशमांश	धनु	सिंह	वृष	मीन	मक	वृश्चि	मक	कन्या
एकादशांश	मीन	सिंह	वृष	कुंभ	वृष	मीन	वृष	धनु
द्वादशांश	वृष	तुला	कर्क	मीन	मिथु	वृष	मिथु	कुंभ

द्वादशवर्गीय बल

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	शत्रु
होरा	मित्र	स्व	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु
द्रेष्काण	सम	शत्रु	सम	सम	सम	सम	शत्रु
चतुर्थांश	सम	सम	शत्रु	सम	सम	सम	स्व
पंचमांश	सम	सम	स्व	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र
षष्ठांश	सम	सम	स्व	शत्रु	स्व	शत्रु	शत्रु
सप्तमांश	सम	शत्रु	सम	शत्रु	सम	स्व	मित्र
अष्टमांश	मित्र	सम	सम	सम	सम	सम	मित्र
नवमांश	मित्र	सम	स्व	शत्रु	स्व	स्व	मित्र
दशमांश	स्व	सम	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
एकादशांश	स्व	सम	शत्रु	शत्रु	स्व	स्व	मित्र
द्वादशांश	सम	स्व	सम	स्व	शत्रु	शत्रु	स्व
शुभ	5	3	4	3	3	5	8
सम	7	7	5	4	8	4	0
अशुभ	0	2	3	5	1	3	4
कुल	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ

हर्ष बल

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम बल	0	0	5	0	5	5	0
द्वितीय बल	0	0	0	0	5	0	0
तृतीय बल	5	0	5	0	5	0	5
चतुर्थ बल	0	5	0	5	0	5	5
कुल	5	5	10	5	15	10	10
बल	**क्षीण**	**क्षीण**	**सामान्य**	**क्षीण**	**बली**	**सामान्य**	**सामान्य**

पंचवर्गीय बल

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
क्षेत्रीय बल	15.00	22.50	7.50	22.50	15.00	22.50	7.50
उच्च बल	8.46	7.27	19.26	6.74	17.57	11.99	18.03
हददा बल	7.50	3.75	7.50	3.75	11.25	15.00	11.25
द्रेष्काण	5.00	2.50	5.00	5.00	5.00	5.00	2.50
नवमांश	3.75	2.50	5.00	1.25	5.00	5.00	3.75
कुल	39.71	38.52	44.26	39.24	53.82	59.49	43.03
विंशोपक	9.93	9.63	11.07	9.81	13.46	14.87	10.76
बल	**सामान्य**	**सामान्य**	**शुभ**	**सामान्य**	**शुभ**	**शुभ**	**शुभ**

वर्षेश निर्णय

स्वामित्व	ग्रह	बल	लग्न पर दृष्टि	वर्षेश
जन्म लग्नाधिपति	गुरु	13.46	शुभ	
वर्ष लग्नाधिपति	बुध	9.81	अतिशुभ	
मुन्था लग्नाधिपति	सूर्य	9.93	अशुभ	**शुक्र**
दिवापति	सूर्य	9.93	अशुभ	
त्रिराशिपति	शुक्र	14.87	अतिशुभ	

सहम

सहम जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को प्रदर्शित करने वाली विशेष स्थिति या बिन्दु है। ग्रह या भावों के विपरीत सहम जीवन की एक ही घटना से संबंध रखता है। आचार्य नीलकंठ के अनुसार सहम 50 हैं। यदि सहम और इसका स्वामी शुभ हो या शुभदृष्ट हो तो यह सांकेतिक घटना के लिए शुभ फल प्रदान करता है। ताजिक शास्त्र के अनुसार किसी भी घटना की अवधि को इसकी स्थिति, स्वामी तथा उस राशि की स्थिति से ज्ञात किया जाता है जिसमें यह स्थित है। नीचे सहमों की गणना करके उनकी संभावित तिथियां दी गई हैं जो अग्रिम फलादेश में सहायक सिद्ध हो सकेंगी।

सहम	राशि	अंश	स्वा	घटना तिथि
पुण्य	मकर	20:09:40	शनि	29/03/2015
गुरु	मिथुन	22:59:44	बुध	04/06/2015
ज्ञान	मिथुन	22:59:44	बुध	04/06/2015
यश	मीन	14:53:51	गुरु	24/09/2015
मित्र	सिंह	12:04:24	सूर्य	07/07/2015
माहात्म्य	वृश्चिक	06:03:47	मंगल	06/11/2015
आशा	धनु	28:44:35	गुरु	28/06/2015
समर्थ	कन्या	01:14:06	बुध	25/07/2015
भातृ	कर्क	10:40:37	चन्द्र	20/09/2015
गौरव	मकर	26:50:43	शनि	05/04/2015
राजा	धनु	09:58:13	गुरु	07/06/2015
पितृ	धनु	09:58:13	गुरु	07/06/2015
मातृ	कुम्भ	08:56:02	शनि	17/04/2015
सुत	सिंह	20:52:05	सूर्य	14/07/2015
जीव	मकर	02:28:47	शनि	10/03/2015
अम्बु	कुम्भ	08:56:02	शनि	17/04/2015
कर्म	कन्या	01:14:06	बुध	25/07/2015
रोग	सिंह	27:33:08	सूर्य	20/07/2015
कामदेव	कुम्भ	08:19:43	शनि	16/04/2015
कलि	मीन	29:22:56	गुरु	11/10/2015
क्षेम	मीन	29:22:56	गुरु	11/10/2015
शास्त्र	वृष	25:12:14	शुक्र	27/05/2015
बन्धु	कुम्भ	08:19:43	शनि	16/04/2015
बंधक	कुम्भ	08:19:43	शनि	16/04/2015
मृत्यु	कर्क	01:58:18	चन्द्र	13/09/2015

सहम

सहम	राशि	अंश	स्वा	घटना तिथि
परदेश	कुम्भ	28:18:51	शनि	07/05/2015
अर्थ	मिथुन	28:27:05	बुध	09/06/2015
परदारा	वृश्चिक	10:21:04	मंगल	11/11/2015
अन्यकर्म	सिंह	11:23:15	सूर्य	07/07/2015
वणिक	मिथुन	04:49:42	बुध	19/05/2015
कार्यसिद्धि	मिथुन	08:27:00	बुध	22/05/2015
विवाह	धनु	28:44:35	गुरु	28/06/2015
प्रसूति	वृष	04:07:04	शुक्र	05/05/2015
संताप	मिथुन	01:58:18	बुध	16/05/2015
श्रद्धा	कन्या	01:50:25	बुध	26/07/2015
प्रीति	मीन	24:24:46	गुरु	05/10/2015
बल	मीन	14:53:51	गुरु	24/09/2015
देह	मीन	14:53:51	गुरु	24/09/2015
जाडय	मेष	11:12:18	मंगल	26/03/2015
व्यापार	वृश्चिक	11:55:19	मंगल	13/11/2015
जलपतन	मेष	11:12:18	मंगल	26/03/2015
शत्रु	मकर	18:28:52	शनि	27/03/2015
शौर्य	कन्या	07:05:37	बुध	30/07/2015
उपाय	मकर	02:28:47	शनि	10/03/2015
दरिद्रता	मकर	20:09:40	शनि	29/03/2015
गुरुता	कुम्भ	05:26:36	शनि	13/04/2015
जलपथ	मिथुन	28:50:06	बुध	10/06/2015
बंधन	मकर	03:59:47	शनि	12/03/2015
कन्या	कुम्भ	08:56:02	शनि	17/04/2015
अश्व	कन्या	15:40:11	बुध	07/08/2015

वर्ष फलित त्रिपताकी कुंडली

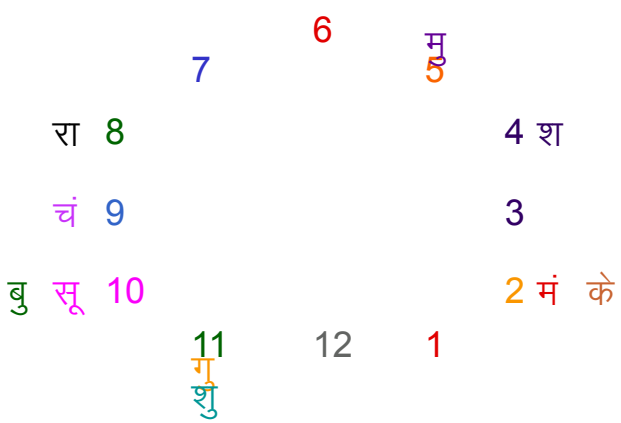

पात्यंश दशा

मंगल		शनि		बुध		शुक्र		लग्न	
11/01/2015		13/03/2015		23/04/2015		19/07/2015		27/07/2015	
13/03/2015		23/04/2015		19/07/2015		27/07/2015		24/10/2015	
मंग	21/01/2015	शनि	18/03/2015	बुध	14/05/2015	शुक्र	19/07/2015	लग्न	18/08/2015
शनि	28/01/2015	बुध	27/03/2015	शुक्र	16/05/2015	लग्न	21/07/2015	सूर्य	01/09/2015
बुध	11/02/2015	शुक्र	28/03/2015	लग्न	06/06/2015	सूर्य	23/07/2015	गुरु	03/09/2015
शुक्र	13/02/2015	लग्न	07/04/2015	सूर्य	20/06/2015	गुरु	23/07/2015	चंद्र	06/09/2015
लग्न	28/02/2015	सूर्य	14/04/2015	गुरु	22/06/2015	चंद्र	23/07/2015	मंग	21/09/2015
सूर्य	10/03/2015	गुरु	15/04/2015	चंद्र	25/06/2015	मंग	24/07/2015	शनि	01/10/2015
गुरु	12/03/2015	चंद्र	16/04/2015	मंग	09/07/2015	शनि	25/07/2015	बुध	22/10/2015
चंद्र	13/03/2015	मंग	23/04/2015	शनि	19/07/2015	बुध	27/07/2015	शुक्र	24/10/2015

सूर्य		गुरु		चन्द्र		मंगल	
24/10/2015		23/12/2015		01/01/2016		11/01/2016	
23/12/2015		01/01/2016		11/01/2016		00/00/0000	
सूर्य	03/11/2015	गुरु	23/12/2015	चंद्र	02/01/2016	मंग	11/01/2016
गुरु	04/11/2015	चंद्र	23/12/2015	मंग	03/01/2016		00/00/0000
चंद्र	06/11/2015	मंग	25/12/2015	शनि	04/01/2016		00/00/0000
मंग	16/11/2015	शनि	26/12/2015	बुध	06/01/2016		00/00/0000
शनि	23/11/2015	बुध	28/12/2015	शुक्र	07/01/2016		00/00/0000
बुध	07/12/2015	शुक्र	29/12/2015	लग्न	09/01/2016		00/00/0000
शुक्र	08/12/2015	लग्न	31/12/2015	सूर्य	11/01/2016		00/00/0000
लग्न	23/12/2015	सूर्य	01/01/2016	गुरु	11/01/2016		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
पात्यंश दशा पूरे 1 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

मुद्दा दशा

मंगल		राहु		गुरु		शनि		बुध	
11/01/2015		01/02/2015		28/03/2015		15/05/2015		12/07/2015	
01/02/2015		28/03/2015		15/05/2015		12/07/2015		02/09/2015	
मंग	12/01/2015	राहु	09/02/2015	गुरु	03/04/2015	शनि	24/05/2015	बुध	19/07/2015
राहु	15/01/2015	गुरु	16/02/2015	शनि	11/04/2015	बुध	02/06/2015	केतु	22/07/2015
गुरु	18/01/2015	शनि	25/02/2015	बुध	18/04/2015	केतु	05/06/2015	शुक्र	31/07/2015
शनि	21/01/2015	बुध	05/03/2015	केतु	21/04/2015	शुक्र	15/06/2015	सूर्य	03/08/2015
बुध	24/01/2015	केतु	08/03/2015	शुक्र	29/04/2015	सूर्य	18/06/2015	चंद्र	07/08/2015
केतु	25/01/2015	शुक्र	17/03/2015	सूर्य	01/05/2015	चंद्र	22/06/2015	मंग	10/08/2015
शुक्र	29/01/2015	सूर्य	20/03/2015	चंद्र	05/05/2015	मंग	26/06/2015	राहु	18/08/2015
सूर्य	30/01/2015	चंद्र	24/03/2015	मंग	08/05/2015	राहु	04/07/2015	गुरु	25/08/2015
चंद्र	01/02/2015	मंग	28/03/2015	राहु	15/05/2015	गुरु	12/07/2015	शनि	02/09/2015

केतु		शुक्र		सूर्य		चन्द्र		मंगल	
02/09/2015		23/09/2015		23/11/2015		11/12/2015		11/01/2016	
23/09/2015		23/11/2015		11/12/2015		11/01/2016		00/00/0000	
केतु	03/09/2015	शुक्र	03/10/2015	सूर्य	24/11/2015	चंद्र	14/12/2015	मंग	11/01/2016
शुक्र	07/09/2015	सूर्य	06/10/2015	चंद्र	26/11/2015	मंग	16/12/2015		00/00/0000
सूर्य	08/09/2015	चंद्र	11/10/2015	मंग	27/11/2015	राहु	20/12/2015		00/00/0000
चंद्र	10/09/2015	मंग	15/10/2015	राहु	29/11/2015	गुरु	24/12/2015		00/00/0000
मंग	11/09/2015	राहु	24/10/2015	गुरु	02/12/2015	शनि	29/12/2015		00/00/0000
राहु	14/09/2015	गुरु	01/11/2015	शनि	05/12/2015	बुध	02/01/2016		00/00/0000
गुरु	17/09/2015	शनि	11/11/2015	बुध	07/12/2015	केतु	04/01/2016		00/00/0000
शनि	20/09/2015	बुध	20/11/2015	केतु	08/12/2015	शुक्र	09/01/2016		00/00/0000
बुध	23/09/2015	केतु	23/11/2015	शुक्र	11/12/2015	सूर्य	11/01/2016		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
मुद्दा दशा पूरे 1 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा–सूक्ष्म

सूर्य–गुरु–केतु	
14/01/2015 04:43	
31/01/2015 05:48	
केतु	15/01/2015 04:35
शुक्र	18/01/2015 00:46
सूर्य	18/01/2015 21:13
चंद्र	20/01/2015 07:18
मंग	21/01/2015 07:10
राहु	23/01/2015 20:32
गुरु	26/01/2015 03:04
शनि	28/01/2015 19:51
बुध	31/01/2015 05:48

सूर्य–गुरु–शुक्र	
31/01/2015 05:48	
20/03/2015 22:36	
शुक्र	08/02/2015 08:36
सूर्य	10/02/2015 19:02
चंद्र	14/02/2015 20:26
मंग	17/02/2015 16:37
राहु	24/02/2015 23:56
गुरु	03/03/2015 11:47
शनि	11/03/2015 04:50
बुध	18/03/2015 02:25
केतु	20/03/2015 22:36

सूर्य–गुरु–सूर्य	
20/03/2015 22:36	
04/04/2015 13:14	
सूर्य	21/03/2015 16:08
चंद्र	22/03/2015 21:21
मंग	23/03/2015 17:48
राहु	25/03/2015 22:24
गुरु	27/03/2015 21:09
शनि	30/03/2015 04:40
बुध	01/04/2015 06:21
केतु	02/04/2015 02:48
शुक्र	04/04/2015 13:14

सूर्य–गुरु–चंद्र	
04/04/2015 13:14	
28/04/2015 21:38	
चंद्र	06/04/2015 13:56
मंग	08/04/2015 00:02
राहु	11/04/2015 15:41
गुरु	14/04/2015 21:37
शनि	18/04/2015 18:08
बुध	22/04/2015 04:56
केतु	23/04/2015 15:01
शुक्र	27/04/2015 16:25
सूर्य	28/04/2015 21:38

सूर्य–गुरु–मंग	
28/04/2015 21:38	
15/05/2015 22:43	
मंग	29/04/2015 21:30
राहु	02/05/2015 10:52
गुरु	04/05/2015 17:24
शनि	07/05/2015 10:11
बुध	09/05/2015 20:08
केतु	10/05/2015 20:00
शुक्र	13/05/2015 16:10
सूर्य	14/05/2015 12:38
चंद्र	15/05/2015 22:43

सूर्य–गुरु–राहु	
15/05/2015 22:43	
28/06/2015 18:38	
राहु	22/05/2015 12:30
गुरु	28/05/2015 08:46
शनि	04/06/2015 07:19
बुध	10/06/2015 12:20
केतु	13/06/2015 01:42
शुक्र	20/06/2015 09:01
सूर्य	22/06/2015 13:37
चंद्र	26/06/2015 05:17
मंग	28/06/2015 18:38

सूर्य–शनि–शनि	
28/06/2015 18:38	
22/08/2015 17:11	
शनि	07/07/2015 11:25
बुध	15/07/2015 06:12
केतु	18/07/2015 11:07
शुक्र	27/07/2015 14:53
सूर्य	30/07/2015 08:48
चंद्र	03/08/2015 22:41
मंग	07/08/2015 03:36
राहु	15/08/2015 09:23
गुरु	22/08/2015 17:11

सूर्य–शनि–बुध	
22/08/2015 17:11	
10/10/2015 20:57	
बुध	29/08/2015 16:19
केतु	01/09/2015 13:09
शुक्र	09/09/2015 17:46
सूर्य	12/09/2015 04:45
चंद्र	16/09/2015 07:04
मंग	19/09/2015 03:53
राहु	26/09/2015 12:51
गुरु	03/10/2015 02:09
शनि	10/10/2015 20:57

सूर्य–शनि–केतु	
10/10/2015 20:57	
31/10/2015 02:44	
केतु	12/10/2015 01:17
शुक्र	15/10/2015 10:15
सूर्य	16/10/2015 10:32
चंद्र	18/10/2015 03:01
मंग	19/10/2015 07:21
राहु	22/10/2015 08:14
गुरु	25/10/2015 01:00
शनि	28/10/2015 05:55
बुध	31/10/2015 02:44

सूर्य–शनि–शुक्र	
31/10/2015 02:44	
27/12/2015 22:41	
शुक्र	09/11/2015 18:03
सूर्य	12/11/2015 15:27
चंद्र	17/11/2015 11:07
मंग	20/11/2015 20:05
राहु	29/11/2015 12:16
गुरु	07/12/2015 05:20
शनि	16/12/2015 09:05
बुध	24/12/2015 13:43
केतु	27/12/2015 22:41

सूर्य–शनि–सूर्य	
27/12/2015 22:41	
14/01/2016 07:04	
सूर्य	28/12/2015 19:30
चंद्र	30/12/2015 06:12
मंग	31/12/2015 06:29
राहु	02/01/2016 20:57
गुरु	05/01/2016 04:28
शनि	07/01/2016 22:23
बुध	10/01/2016 09:23
केतु	11/01/2016 09:40
शुक्र	14/01/2016 07:04

सूर्य–शनि–चंद्र	
14/01/2016 07:04	
12/02/2016 05:02	
चंद्र	16/01/2016 16:54
मंग	18/01/2016 09:23
राहु	22/01/2016 17:29
गुरु	26/01/2016 14:00
शनि	31/01/2016 03:53
बुध	04/02/2016 06:12
केतु	05/02/2016 22:41
शुक्र	10/02/2016 18:21
सूर्य	12/02/2016 05:02

वर्ष योग

इक्कबाल योग

यदि वर्ष कुंडली में सभी ग्रह केन्द्र (1.4.7.10) और पणफर (2.5.8.11) स्थानों में हो तो इक्कबाल नामक योग होता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

इन्दुवार योग

वर्ष कुंडली में यदि सूर्यादि सभी ग्रह आपीक्लिम (3.6.9.12) स्थानों में हो तो इन्दुवार योग होता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

इत्थशाल योग

यदि लग्नेश और अन्य ग्रह (कार्येश) की परस्पर दृष्टि हो तथा दोनों ग्रह दीप्तांशों के अन्तर्गत हों तो इत्थशाल योग होता है। यह तीन प्रकार का होता है। वर्तमान, सम्पूर्ण और भविष्यत। सम्पूर्ण इत्थशाल तब होता है जबकि शीघ्रगामी ग्रह मन्दगति ग्रह से 1 कला के अंतर पर हो। वर्तमान इत्थशाल में शीघ्रगति वाले ग्रह के अंश कम एवं मन्दगति ग्रह के अंश अधिक हों तथा दोनों की परस्पर दृष्टि हो। भविष्यत इत्थशाल तब होता है जबकि शीघ्रगति ग्रह राशि के अन्तिम अंश में हो तथा दूसरी राशि पर मन्द गति ग्रह हो परन्तु मध्यान्तर दीप्तांशो के अन्तर्गत हों।

इस वर्ष आपकी वर्तमान शीघ्र गति ग्रह बुध (मक 14:18:09), एवं मन्दगति ग्रह शुक्र (मक 14:54:28), के मध्य है।

वर्ष कुंडली में यह योग अत्यन्त ही शुभ एवं सफलता का द्योतक समझा जाता है। अतः इसके शुभ प्रभाव से इस वर्ष आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं समृद्धि से युक्त होगा तथा सभी सदस्य आपस में मिलकर रहेंगे एवं एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इस समय आप वाणी के प्रभाव से अन्य जनों से लाभ एवं सहयोग अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही इस वर्ष में स्वादिष्ट व्यंजनों की प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त यह भाग्यादेय का वर्ष भी है। अतः आपके रूके हुए शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे तथा सामाजिक मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। साथ ही कार्य क्षेत्र में आप सौभाग्य से वांछित उन्नति एवं लाभ अर्जित करेंगे। इस वर्ष महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली लोगों से सम्पर्क स्थापित होंगे तथा उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग अर्जित करने में समर्थ होंगे अतः वर्ष में प्राप्त सुअवसरो का सदुपयोग करने के लिए तत्पर रहें।

इसराफ योग

यदि शीघ्रगामी ग्रह मन्दगामी ग्रह से आगे हो तो इसराफ योग होता है यह इत्थशाल का विपरीत होता है।

इसराफ योग मन्दगति ग्रह शनि (वृश्चि 07:44:36), एवं शीघ्र गति ग्रह बुध (मक 14:18:09), के मध्य बन रहा है।

वर्ष कुंडली में सामान्यतय यह योग अच्छा नहीं माना जाता है। अतः इसके प्रभाव से इस वर्ष में आपको संततिपक्ष से चिन्ता एवं परेशानी होगी तथा उनसे सन्तुष्टि कम ही मिलेगी। उच्चशिक्षारत लोगों के लिए वर्ष परिश्रम से ही वांछित सफलता प्रदान कर सकता है। साथ ही राजनीति में सक्रिय लोगों के लिए वर्ष विशेष उन्नतिकारक नही होगा। इसके अतिरिक्त प्रतियोगी परीक्षा चुनाव या मुकद्दमे आदि में सफलता के कम ही अवसर होंगे तथा शत्रु पक्ष आप पर भारी पड़ेंगे। इस समय कर्ज या रोग मुक्ति में भी विलम्ब होगा साथ ही मामा से संबंधो में तनाव या मतभेद उत्पन्न हो सकता है। अतः सोचसमझ कर बुद्धिमता पूर्वक कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

नक्त योग

यदि लग्नेश और कार्येश में दृष्टि न हो और उन दोनों के मध्य दीप्तांशों के अन्तर्गत ऐसा शीघ्रगामी ग्रह हो जो लग्नेश और कर्मेश को देखता हो तो एक ग्रह के तेज को लेकर दूसरों को देता है। इस योग में किसी तीसरे व्यक्ति की सहायता से कार्य बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

यमया योग

यदि लग्नेश और कार्येश की परस्पर दृष्टि न हो और कोई मन्दगति वाला ग्रह दीप्ताशों के अन्तर्गत हो तथा दोनों को देखता हो तो वह शीघ्रगति ग्रह मन्दगति वाले ग्रह को दे देता है।

यमया योग बुध तथा मंग के मध्य है क्योंकि शनि मन्दगति ग्रह है तथा लग्नेश एवं कार्येश दोनों को देखता है।

इस योग के शुभ प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी यदि नौकरी पर है तो पदोन्नति का अवसर मिलेगा जिससे मान सम्मान एवं अधिकारों की वृद्धि होगी। व्यापार के क्षेत्र में व्यापार में विस्तार होगा अथवा कोई नया कार्य प्रारंम्भ होगा जिससे भविष्य में लाभ के प्रबल योग बनेंगे। धनार्जन की दृष्टि से वर्ष उत्तम फलदायी होगा। इस समय आपकी आय में वृद्धि होगी तथा आप के आय स्रोत एक से अधिक होगें जिससे आर्थिक सुदृढ़ता रहेगी। इसके अतिरिक्त प्रभावशाली लोंगो से भी सम्पर्क स्थापित होंगे।

मणऊ योग

यदि लग्नेश एवं कर्मेश में इत्थशाल हो किन्तु कोई पाप ग्रह दोनों को या एक को भी शत्रु दृष्टि से देखता हो तथा दीप्तांशों के अन्तर्गत हो तो मणऊ योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

कम्बूल योग

यदि लग्नेश और कार्येश में परस्पर इत्थशाल हो तथा इन दोनों में एक से भी चन्द्रमा इत्थशाल करता हो तो कम्बूल योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

गैरी कम्बूल योग

लग्नेश एवं कार्येश दोनों का इत्शाल हो परंतु चन्द्रमा की इन पर दृष्टि न हो किन्तु वही चन्द्रमा बलवान होकर अग्रिम राशि में जाकर किसी अन्य बलवान ग्रह से इत्थशाल करे तो गैरी कम्बूल योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

खल्लासर योग

लग्नेश और कार्येश का परस्पर इत्थशाल हो लेकिन शून्यमार्गी चन्द्रमा किसी से इत्थशाल न करता हो तो खल्लासर नामक योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

रदद योग

यदि लग्नेश और कार्येश में कोई ग्रह अस्त नीच शत्रु क्षेत्री अथवा 6.8.12 में हो और परस्पर इत्थशाली हो, क्रूर ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो रदद नामक योग बनता है।

रदद योग की सृष्टि बुध एवं शुक्र के मध्य हो रही है क्योंकि चंद्र सूर्य से युक्त है

इस योग के शुभ प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति में अत्यन्त ही सुदृढ़ता आएगी तथा आय पूर्ण होगी। इस समय आपकी महत्वाकांक्षाएं भी पूर्ण होगी एवं अधिकार सम्पन्न लोंगों से सम्पर्क स्थापित होंगे जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण रूके हुए कार्य आसानी से सम्पन्न होंगे। इस वर्ष में आपको अचानक धन लाभ के भी बनते है। साथ ही किसी जायदाद की प्राप्ति भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त ज्योतिष एवं पराविद्या के क्षेत्र में आपका रूझान हो सकता है।

दुफालिकुत्थ योग

लग्नेश और कार्येश में इत्थशाल हो (1) इन दोनों में से मन्दगति वाला ग्रह अपनी उच्च राशि /स्वराशि /नवांश / द्रेष्काण आदि में बलवान हो तथा (2) शीघ्रगामी ग्रह अपनी उच्च स्वराशि में न हो तथा निर्बल हो तो दुफालिकुत्थ योग बनता है।

दुफालिकुत्थ योग बुध एवं शुक्र के मध्य बन रहा है क्योंकि शीघ्रगति ग्रह बुध दुर्बल है तथा मन्दगति ग्रह शुक्र बलिष्ठ है ।

इस योग के शुभ प्रभाव से इस वर्ष आपके कार्य क्षेत्र में विशिष्ट उन्नति एवं सफलता के योग बनेंगे। नौकरी करने वालों को इस समय प्रोन्नति मिलेगी तथा मान सम्मान एवं आर्थिक स्तर में वांछित वृद्धि होगी। व्यापारिक क्षेत्र में इस समय आशातीत लाभ होगा एवं किसी नवीन योजना का शुभारम्भ भी होगा या वर्तमान कार्य में भी विस्तार हो सकता है। इस समय भाग्य की प्रबलता होगी तथा भाग्योदय के अवसर प्राप्त होंगे। इसके अतिरिक्त कोई धार्मिक या मांगलिक कार्य भी घर में सम्पन्न होंगा। साथ ही पूंजीनिवेश के द्वारा भविष्य में लाभ के योग बनेंगे।

दुत्थकुत्थीर योग

यदि लग्नेश और कार्येश निर्बल होकर इत्थशाल करें और उनमें से एक किसी ग्रह से जो अपने उच्च या स्वगृह में बैठा हो, बलवान हो इत्थशाल करे तो दुत्थकुत्थीर योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

तम्बीर योग

इस योग में लग्नेश और कार्येश की परस्पर दृष्टि नहीं होती किन्तु इन दोनों में से कोई एक ग्रह राशि के अन्त में होता है एवं आगामी राशि में स्वगृही ग्रह से दीप्तांशों के अन्तर्गत इत्थशाल करता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

कुत्थ योग

यदि वर्ष कुंडली में लग्नेश कार्येश बलवान हों तो कुत्थ योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

दुरूफ योग

यदि वर्ष कुंडली में लग्नेश एवं कार्येश निर्बल हो तो दुरूफयोग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

अथ वर्षेशफलम्

वर्ष कुण्डली में जन्म लग्नेश, वर्ष लग्नेश, मुन्थेश, त्रिराशिपति एवं दिवारात्रिपति में से जो सबसे बलवान हो तथा लग्न पर दृष्टि रखता हो, वर्षेश कहलाता है। इसका अपना विशिष्ट महत्व होता है। यह अपने शुभाशुभत्व से वर्ष के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण घटनाओं को प्रभावित करता है क्योंकि यह वर्ष पंचाधिकारयों में बलवान तथा लग्न पर प्रभाव रखता है अतः इसकी स्थिति अन्य समस्त ग्रहों से प्रबल हो जाती है तथा अधिकाँश शुभाशुभ फल इसी के प्रभाव से प्राप्त होते हैं। पूर्णबली होने से सम्पूर्ण वर्ष में शुभ फल प्राप्त होते हैं, मध्यबली होने से शुभाशुभ मिश्रित फल तथा हीन बली होने से अनिष्ट फल अधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं। यथाः–

वर्षेश्वरो भवति यः स दशाधिपेऽब्दे।
ज्ञेयोऽखिलेऽब्दजनुषोर्बलमस्य चिन्त्यम्।।

वीर्योन्वितेऽत्र निखिलं शुभमब्दमाहुः।
हीनेत्वानिष्टफलता समता समत्वे।।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

इस वर्ष में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा समय समय पर आप शारीरिक कष्ट की प्राप्ति करेंगे। इस समय आपकी मानसिक स्थिति भी दयनीय रहेगी तथा मन में संताप से व्याकुलता की प्रबलता रहेगी। साथ ही अन्य कई प्रकार से आपको दुःखों की प्राप्ति होगी। इस समय संतति या स्त्री से आपको कोई विशेष सुख एवं सहयोग नहीं मिलेगा तथा इनसे आपको कष्ट की ही प्राप्ति होगी साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आपके मान सम्मान में भी न्यूनता रहेगी तथा सभी लोग आपको उपहास का पात्र समझेंगे तथा छोटी छोटी बातों पर आपकी हंसी उड़ाएंगे। मित्र वर्ग से भी इस वर्ष आपको कोई सहयोग या लाभ नहीं मिलेगा। इस समय निम्न श्रेणी की महिलाओं से आपको अत्यधिक हानि तथा कष्ट प्राप्त होगा अतः प्रयत्नपूर्वक इनकी उपेक्षा करें तथा इनसे सावधान रहें।

व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में उन्नति के लिए भी वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय व्यापार में समस्याएं उत्पन्न होंगी तथा हानि की भी संभावना रहेगी। अतः आपको अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में भी अवन्नति की संभावना रहेगी अतः इस समय उच्चाधिकारी वर्ग या वरिष्ठ नेताओं की उपेक्षा न करें तथा विनम्रता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करें। आर्थिक स्थिति भी इस समय अच्छी नहीं रहेगी तथा समय समय पर आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। इस वर्ष में आप जो भी कार्य प्रारंभ करेंगे उनमें आपको असफलता ही प्राप्त होगी।अतः नवीन कार्यो को इस समय प्रारंभ न करें तथा धैर्य एवं शान्ति पूर्वक समय व्यतीत करें।

अथ मुंथाफलम्

जन्म के प्रथम वर्ष में लग्न ही मुंथा होती है और प्रतिवर्ष एक एक राशि बढ़ती है। अतः गत वर्ष संख्या में जन्म लग्न जोडे से तथा 12 से भाग देने पर शेषांक मुंथा की वर्तमान राशि होती है। मुंथा प्रतिमाह ढाई अंश तथा प्रतिदिन पाँच कला बढ़ती जाती है। यदि मुंथा शुभ ग्रह व अपने स्वामी से युक्त या दृष्ट हो अथवा शुभ ग्रह या अपने स्वामी के साथ इत्यशाल करे तो शुभ फल की वृद्धि कर अशुभ फल का नाश करती है। यथाः–

शुभस्वामियुक्तेक्षितावीर्ययुक्तेन्थिहास्वामिसौम्येत्थशालं प्रपन्ना।
शुभं भावजं पोषयेन्नाशुभं साऽन्यथाभाव ऊह्यो विभृश्य।।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

इस वर्ष में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शारीरिक कष्ट से आप समय समय पर परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही मन में भी असन्तुष्टि तथा अप्रसन्नता का भाव विद्यमान रहेगा। इस वर्ष आपका व्यय अधिक होगा तथा लाभ अल्प मात्रा में रहेगा।इस समय अन्यंत्र भी धनहानि की संभावना रहेगी अतः आर्थिक स्थिति में विषमता रहेगी तथा यदा कदा समस्याएं भी उत्पन्न होंगी। धर्म के प्रति आपके मन में इस समय विशेष आस्था नहीं रहेगी तथा ध ार्मिक प्रवृतियों के प्रति आपकी उपेक्षा बनी रहेगी। इस वर्ष में आप सद्मित्रों का साथ अल्प ही करेंगे तथा दुष्ट व्यक्तियों से आपकी प्रीति बढ़ेगी। अपने स्वजनों तथा बन्धुवर्ग से भी आपके मन में विशेष स्नेह तथा सहयोग के भाव की अल्पता रहेगी जिससे इनसे भी आपको अल्प सहयोग एवं सु ख प्राप्त होगा।

व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में उन्नति तथा सफलता की दृष्टि से भी वर्ष विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा समय समय पर आपको इस क्षेत्र में समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। नौकरी या राजनीति में इस समय आपके वरिष्ठ नेता तथा उच्चाधिकारी असन्तुष्ट तथा अप्रसन्न रहेंगे जिससे पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न होंगी। व्यापार आदि में भी इस समय विशेष लाभ नहीं होंगा अपितु हानि की ही संभावनाएं रहेंगी।अतः इस समय कोई नवीन कार्य प्रारंभ न करें तथा अपने सहयोगी या साझेदार से भी सावधान रहें। इसके अतिरिक्त इस समय भूमि या जायदाद संबधी हानि या परेशानी भी हो सकती है। अतः संयम एवं शान्तिपूर्वक समय को व्यतीत करें।

अथ मुंथेशफलम्

वर्ष कुण्डली में मुंथा जिस राशि में स्थित हो उस राशि का स्वामी मुंथेश कहलाता है। यह वर्ष के पंचाधिकारियों में एक प्रमुख ग्रह होता है। अतः शुभभावस्थ मुंथेश के प्रभाव से जातक विशिष्ट परिस्थतियों में उत्तम लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहता है। यदि वर्ष प्रवेश के समय मुंथेश षष्ठ, अष्टम, द्वादश तथा चतुर्थ भाव में स्थित हो या अस्त, वक्री एवं पापग्रहों से युक्त हो अथवा क्रूर ग्रहों के स्थान से चतुर्थ या सप्तम स्थान में स्थित हो तो शुभ फलदायक न होकर अशुभफल, धनहानि या शरीर संबधी कष्ट प्रदान करता है। यथाः–

षष्ठेऽष्टमेन्त्ये भुवि वेन्थिहेशोऽस्तङगोऽथ वक्रोऽशुभदृष्टियुक्तः।
क्रूराच्चतुर्थास्तगतश्च भव्यो न स्याद्रुजं यच्छति वित्तनाशम्।।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा समय समय पर आप शारीरिक कष्ट तथा परेशानी की अनुभूति करेंगे।साथ ही मानसिक स्थिति भी आपकी मध्यम ही रहेगी तथा मन में चंचलता तथा उद्विग्नता का भाव विद्यमान रहेगा।शत्रु पक्ष से इस समय आप चिंतित रहेंगे तथा उनसे आपको समय समय पर परेशानियां उत्पन्न होंगी अत :शत्रु एवं विरोधियों से आपको सावधान रहना चाहिए।सामाजिक मान प्रतिष्ठा भी इस समय मध्यम रहेगी तथा मिथ्यावाद के कारण आपको कोई परेशानी हो सकती है।मित्र एवं संबधियों से इस समय संबध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा लाभ भी अल्प मात्रा में प्राप्त होगा ।साथ ही आपके कार्यों में व्यवधान आएंगे तथा मानसिक संकल्प भी न्यूनाधिक रूप से अपूर्ण ही रहेंगे।

व्यापारिक क्षेत्र में फक वर्ष आपको हानि का भी सामना करना पड़ सकता है। साथ ही नौकरी या कार्य क्षेत्र में भी उन्नति के मार्ग अवरूद्ध होंगे तथा इसमें कोई समस्या भी उत्पन्न हो सकती है। अतः सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय पूर्ण सावधान रहें तथा विनम्रता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपके लिए कोई अनावश्यक समस्या उत्पन्न हो सकती है। इसके साथ ही वाहन सुख की भी इस वर्ष में न्यूनता रहेगी। अतः संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

अथ वर्षलग्नेशफलम्

वर्ष लग्न के स्वामी को वर्षलग्नेश कहते हैं। वर्ष के पंचाधिकारियों में इसकी विशेष महत्ता है। अतः वर्ष की अनेक शुभाशुभ घटनाओं में लग्नेश का प्रभाव रहता है। साथ ही जातक के स्वास्थ्य, कार्य एवं भाग्य को वर्ष में यह विशेष रूप से प्रभावित करता है। यदि वर्ष लग्नेश पंचवर्गी बल से पूर्ण बलवान हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों या शुभ ग्रहों से युति हो और स्वयं केन्द्र तथा त्रिकोण स्थान में स्थित हो तो वह सम्पूर्ण अरिष्टों को नष्ट करके सुख और धन देता है। यथाः–

लग्नाधिपो बलयुतः शुभेक्षित युतोऽपि वा।
केन्द्रत्रिकोणगोऽरिष्टम् नाशयेत्सुखवित्तदः।।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा यदा कदा आपको अस्वस्थता की अनुभूति होगी जिससे शरीर में दुर्बलता रहेगी तथा स्वभाव में क्रोध भी उत्पन्न होगा । साथ ही मानसिक स्थिति भी मध्यम रहेगी एवं व्याकुलता तथा अशान्ति की आप समय समय पर अनुभूति करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में न्यूनता रहेगी तथा कार्यो में परेशानी होगी । संतति पक्ष के लिए भी समय अच्छा नहीं रहेगा तथा उनके सुख एवं स्वास्थ्य में अल्पता रहेगी। साथ ही अपने कार्य क्षेत्र में वे सामान्य सफलता अर्जित करेंगे। स्त्री से भी इस समय संबंधों में तनाव रहेगा फलतः दाम्पत्य जीवन के सुख में न्यूनता की अनुभूति होगी। धार्मिक कार्य कलापों में भी आपकी विशेष रूचि नहीं रहेगी तथा इनके प्रति आप उपेक्षा का ही प्रदर्शन करेंगे। इसके अतिरिक्त भौतिक सुख संसाधन भी आप परिश्रम एवं संघर्ष से प्राप्त करेंगे।

व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र की उन्नति के लिए वर्ष सामान्य उन्नति दायक रहेगा तथापि यदा कदा आपको व्यापार में समस्याओं का सामना करना पड़ेगा परन्तु इनका समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे । नौकरी या राजनीति में यद्यपि आपकी पदोन्नति में विलम्ब एवं व्यवधान आएंगे परन्तु अन्त में आपको सफलता अवश्य मिलेगी। साथ ही वरिष्ठ नेताओं या अधिकारी वर्ग से भी आपके संबंध सामान्य रहेंगे तथा उनका सुख एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। सामाजिक मान प्रतिष्ठा भी इस समय मध्यम रहेगी परन्तु आर्थिक स्थिति में थोड़ा सुधार होगा। अतः अपने कार्यो की पूर्ति के लिए परिश्रम करते रहें तभी आप न्यूनाधिक सफलता अर्जित कर सकेंगे।

प्रथम मास

11/01/2015 00:24:54 से 09/02/2015 12:46:08 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		कन्या	हस्त	21:34:42
सूर्य		धनु	पूर्वाषाढ़ा	26:08:06
चन्द्र		सिंह	उ0फाल्गुनी	27:33:08
मंगल		कुम्भ	धनिष्ठा	04:38:45
बुध		मकर	श्रवण	14:18:09
गुरु	व	कर्क	आश्लेषा	26:50:31
शुक्र		मकर	श्रवण	14:54:28
शनि		वृश्चिक	अनुराधा	07:44:36
राहु	व	कन्या	हस्त	19:39:51
केतु	व	मीन	रेवती	19:39:51
मुंथा		सिंह	पू0फाल्गुनी	18:55:35

मासाधिपति

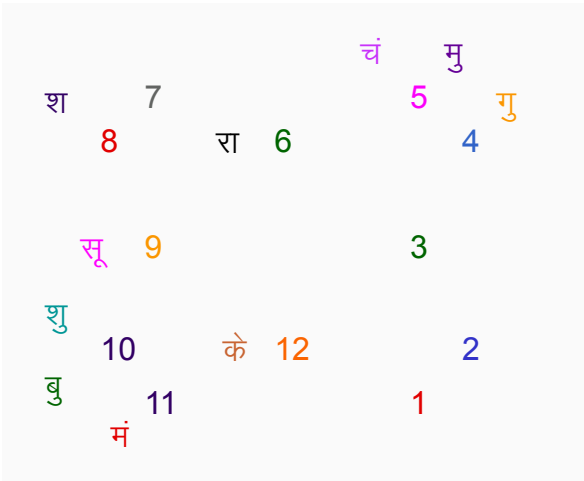

मासाधिपति : शुक्र

इस मास में आपको शुभाशुभ फल प्राप्त होंगे। इसके प्रभाव से आपका इस समय व्यय अधिक होगा एवं दुष्ट मनुष्यों की आपको संगति प्राप्त होगी । सामान्य रूप से आप शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। साथ ही अत्यंत परिश्रम एवं पराक्रम से भी अल्प मात्रा में ही कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में उपेक्षा की भावना उत्पन्न होगी तथा अन्य प्रकार से धन हानि भी हो सकती है। साथ ही मित्रों एवं संबन्धियों से सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। इस समय आपकी नौकरी या व्यापार में भी अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी तथा शत्रुओं से भय एवं चिन्ता नित्य बनी रहेगी। साथ ही जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी तथा यदाकदा आप मन में बैचेनी भी अनुभव करेंगे।

साथ ही अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे ।अतः आप पुत्र एवं स्त्री का सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्र या द्रव्यों की उपलब्धि भी हो सकती है।

द्वितीय मास

09/02/2015 12:46:08 से 11/03/2015 08:21:07 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		वृष	कृतिका	06:18:23
सूर्य		मकर	धनिष्ठा	26:08:06
चन्द्र		कन्या	चित्रा	23:59:29
मंगल		कुम्भ	पू0भाद्रपद	27:39:49
बुध	व	मकर	उत्तराषाढ़ा	07:34:15
गुरु	व	कर्क	आश्लेषा	23:13:35
शुक्र		कुम्भ	पू0भाद्रपद	21:40:53
शनि		वृश्चिक	अनुराधा	09:56:09
राहु		कन्या	हस्त	16:59:52
केतु	व	मीन	रेवती	16:59:52
मुंथा		सिंह	पू0फाल्गुनी	21:25:35

मासाधिपति

मासाधिपति : सूर्य

इस मास में आपके लिए मिलेजुले शुभाशुभ फल होंगे।अतः शारीरिक रूप से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे।साथ ही दुश्मनों से भी आपको भय तथा चिन्ता का वातावरण प्राप्त होगा फलतः मानसिक रूप से भी आप उद्विग्न रहेंगे ।इस समय पारिवारिक जनों से भी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे तथा अनावश्यक रूप से आपसी सम्बन्धों में तनाव का वातावरण उत्पन्न होगा। आपके व्यापार या कार्यक्षेत्र में इस मास हानि या मंदी आ सकती है साथ ही कोई परिवर्तन भी हो सकता है या संबधित कार्य छूट भी सकता है। समाज में अन्य लोगों से भी आपके संबन्धों में कटुता उत्पन्न होगी। अतः सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिकत शरीर में रोग तथा धन की हानि होने की भी सम्भावना रहेगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी घटित होंगे जिससे आप उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग प्राप्त करेंगे एवं कार्यों में किंचित उन्नति का भी आभास होगा। आप इस समय दूर समीप की यात्रा भी करेंगे एवं नवीन वस्त्रादि की भी प्राप्ति होगी। अतः आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

तृतीय मास

11/03/2015 08:21:07 से 10/04/2015 15:13:26 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		मीन	रेवती	23:48:56
सूर्य		कुम्भ	पू0भाद्रपद	26:08:06
चन्द्र		तुला	विशाखा	25:08:56
मंगल		मीन	रेवती	20:31:08
बुध		कुम्भ	धनिष्ठा	02:56:31
गुरु	व	कर्क	आश्लेषा	19:47:15
शुक्र		मीन	रेवती	28:17:33
शनि		वृश्चिक	अनुराधा	10:50:58
राहु		कन्या	हस्त	15:59:19
केतु	व	मीन	उ0भाद्रपद	15:59:19
मुंथा		सिंह	पू0फाल्गुनी	23:55:35

मासाधिपति

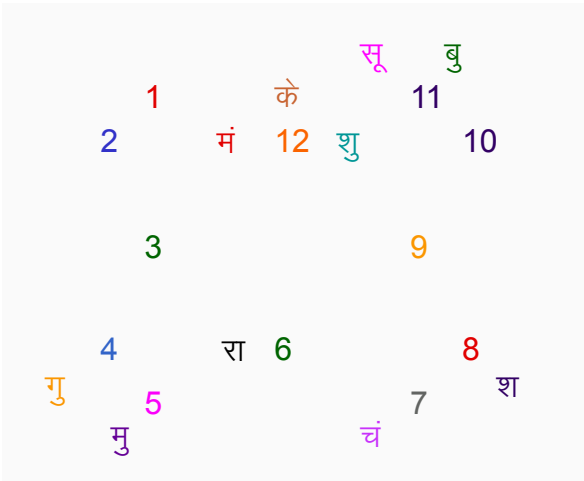

मासाधिपति : शनि

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ फल दायक रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता भी विद्यमान रहेगी। आपके शत्रु इस समय अधिक प्रबल होंगे फलतः शत्रु पक्ष से भय तथा चिन्ता बनी रहेगी । आपके घर में इस समय चोरी भी हो सकती है ।अतः सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी । नौकरी या व्यवसाय में अपने उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें अन्यथा आप किसी प्रकार से दंडित या जुर्माना प्राप्त कर सकते हैं। इस मास आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। इसके साथ ही आप किसी कठोर कार्य को भी सम्पन्न कर सकते हैं। जिसका प्रभाव आपकी प्रतिष्ठा पर पड़ेगा तथा इससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा। आपकी मित्रों तथा सम्बन्धियों से भी इस समय सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा आशाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त करने में भी असमर्थ रहेंगे।

साथ ही इस समय आप पित्तादि दोषों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा रूधिर विकार की भी सम्भावना हो सकती है। अतः इस मास शारीरिक सुरक्षा का भी आपको पूर्ण ध्यान रखना चाहिए जिससे अल्प मात्रा में ही कष्ट हो।

चतुर्थ मास
10/04/2015 15:13:26 से 11/05/2015 10:33:35 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		सिंह	मघा	04:55:20
सूर्य		मीन	रेवती	26:08:06
चन्द्र		धनु	मूल	04:14:40
मंगल		मेष	अश्विनी	13:05:40
बुध		मीन	रेवती	26:23:45
गुरु		कर्क	आश्लेषा	18:31:27
शुक्र		वृष	कृतिका	04:28:42
शनि	व	वृश्चिक	अनुराधा	10:16:23
राहु	व	कन्या	हस्त	15:51:27
केतु	व	मीन	उ0भाद्रपद	15:51:27
मुंथा		सिंह	पू0फाल्गुनी	26:25:35

मासाधिपति : सूर्य

मासाधिपति

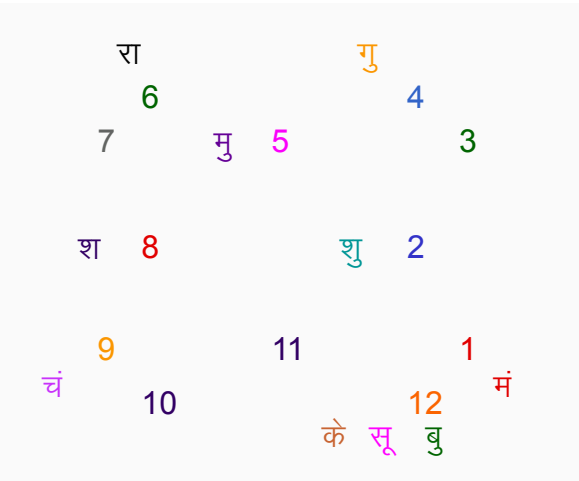

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मन से भी आप शान्त एवं सन्तुष्ट रहेंगे।साथ ही आपके पराक्रम में अभिवृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग आपसे चिन्तित, भयभीत एवं पराजित होंगे। आपके लाभमार्ग इस समय प्रशस्त रहेंगे अतः आर्थिक स्थिति में सुदृढता होगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी आप लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास आपके भाग्योदय सम्बन्धी कार्य सम्पन्न होंगे साथ ही कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होगा जिसकी आप काफी समय से प्रतीक्षा कर रहे थे। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा उनसे सुख भी प्राप्त करेंगे। सांसारिक कार्यो को सिद्ध करने में आप पूर्ण समर्थ रहेंगे तथा अपने उच्चाधिकारियों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में भी आप सफल रहेंगे जिससे आपके सम्मान में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी तथा उचित लाभ एवं सुख प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे । इस मास में धर्मानुपालन में भी आप प्रवृत रहेंगे तथा समाज में पूर्ण मान प्रतिष्ठा अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

पंचम् मास
11/05/2015 10:33:35 से 11/06/2015 16:08:52 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		मिथुन	पुनर्वसु	29:14:02
सूर्य		मेष	भरणी	26:08:06
चन्द्र		मकर	श्रवण	23:07:09
मंगल		वृष	कृतिका	05:17:28
बुध		वृष	रोहिणी	16:32:02
गुरु		कर्क	आश्लेषा	20:06:10
शुक्र		मिथुन	आर्द्रा	09:30:39
शनि	व	वृश्चिक	अनुराधा	08:26:20
राहु	व	कन्या	हस्त	15:08:13
केतु	व	मीन	उ0भाद्रपद	15:08:13
मुंथा		सिंह	उ0फाल्गुनी	28:55:35

मासाधिपति

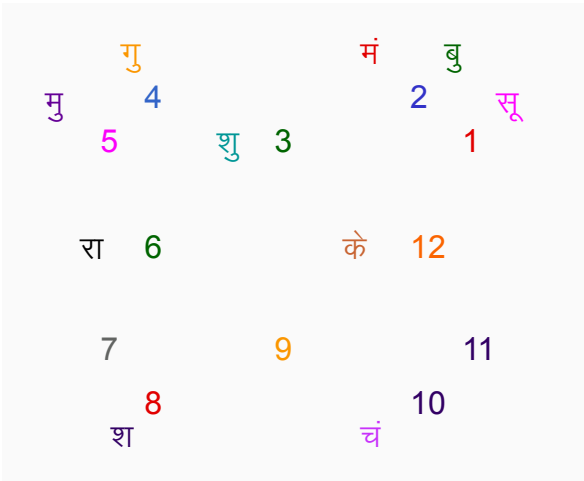

मासाधिपति : सूर्य

इस मास में आप उत्तम फल प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज से भी आपको यथोचित मान सम्मान एवं यश प्राप्त होगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनका पूजन तथा सत्कार करेंगे। दूसरे लोगों की भलाई के लिए भी आप इस मास तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा मान प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी । इसके अतिरिक्त भाइयों से आपको इस समय पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा आपके मानसिक विचार एवं संकल्प भी पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता भी अर्जित करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा भाव उत्पन्न होता रहेगा। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक रहेगा।

षष्ठ मास

11/06/2015 16:08:52 से 13/07/2015 02:48:56 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		तुला	स्वाति	15:11:54
सूर्य		वृष	मृगशिरा	26:08:06
चन्द्र		मीन	रेवती	19:42:35
मंगल		वृष	मृगशिरा	27:00:54
बुध	व	वृष	रोहिणी	10:29:56
गुरु		कर्क	आश्लेषा	24:06:39
शुक्र		कर्क	पुष्य	11:24:08
शनि	व	वृश्चिक	अनुराधा	06:09:52
राहु	व	कन्या	हस्त	13:08:31
केतु	व	मीन	उ0भाद्रपद	13:08:31
मुंथा		कन्या	उ0फाल्गुनी	01:25:35

मासाधिपति : गुरु

मासाधिपति

यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा। अतः इस समय आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। आप का इस मास में व्ययाधिक्य रहेगा तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी प्राप्त होगी। साथ ही स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अपने ही परिश्रम से सिद्ध हो सकेंगे फिर भी आपको पूर्ण सन्तुष्टि नहीं मिलेगी । धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि के योग बनेंगे। मित्रों एवं संबधियों के मध्य आपके संबधों में तनाव रहेगा तथा इनसे आवश्यक सुख तथा सहयोग भी नहीं मिलेगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारंभ करेंगे उसमें अनावश्यक विध्न बाधाएं उत्पन्न होगी जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। शत्रुओं से भी आपके हृदय में नित्य चिन्ता तथा भय का वातावरण बना रहेगा। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यो में भी मनोवांछित सिद्धि नहीं मिलेगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप अपने श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग अर्जित करेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी उन्नति के अवसर बनेंगे। इस मास में आपकी यात्रा भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्रों या वस्तुओं को भी आप अर्जित करने में सफल रहेंगे।

सप्तम् मास
13/07/2015 02:48:56 से 13/08/2015 11:53:03 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		वृष	कृतिका	08:27:24
सूर्य		मिथुन	पुनर्वसु	26:08:06
चन्द्र		वृष	रोहिणी	17:44:23
मंगल		मिथुन	आर्द्रा	18:10:34
बुध		मिथुन	आर्द्रा	13:39:55
गुरु		कर्क	आश्लेषा	29:46:19
शुक्र		सिंह	मघा	03:56:25
शनि	व	वृश्चिक	अनुराधा	04:32:12
राहु	व	कन्या	हस्त	10:06:04
केतु	व	मीन	उ0भाद्रपद	10:06:04
मुंथा		कन्या	उ0फाल्गुनी	03:55:35

मासाधिपति

मासाधिपति : गुरु

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ फल प्रदाता रहेगा तथा अशुभ फल भी न्यूनाधिक रूप से होते रहेंगे। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में आप पुत्र से सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य प्रकार से भी लाभ अर्जित करेंगे। आपके सामाजिक प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे । इस मास में आपके महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण होंगे तथा कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना भी उत्पन्न होगी तथा नियम पूर्वक इनकी सेवा तथा पूजा करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप अनुकूल एवं वांछित सहयोग तथा सम्मान भी अर्जित करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से भी आप मुक्त होंगे।

परन्तु शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा जाने अनजाने किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा गिरेगी एवं आपको इसके लिए पश्चाताप करना पड़ेगा। इस समय आप अग्नि द्वारा भी किसी प्रकार की धन हानि को प्राप्त करेंगे। अतः सोच समझकर अपने सभी कार्यों को सम्पन्न करें।

अष्टम् मास
13/08/2015 11:53:03 से 13/09/2015 13:08:56 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		तुला	स्वाति	13:20:21
सूर्य		कर्क	आश्लेषा	26:08:06
चन्द्र		कर्क	पुष्य	10:50:41
मंगल		कर्क	पुष्य	08:41:47
बुध		सिंह	पू0फाल्गुनी	15:11:42
गुरु		सिंह	मघा	06:18:44
शुक्र	व	सिंह	मघा	00:08:27
शनि		वृश्चिक	अनुराधा	04:18:18
राहु	व	कन्या	उ0फाल्गुनी	07:34:14
केतु	व	मीन	उ0भाद्रपद	07:34:14
मुंथा		कन्या	उ0फाल्गुनी	06:25:35

मासाधिपति : बुध

मासाधिपति

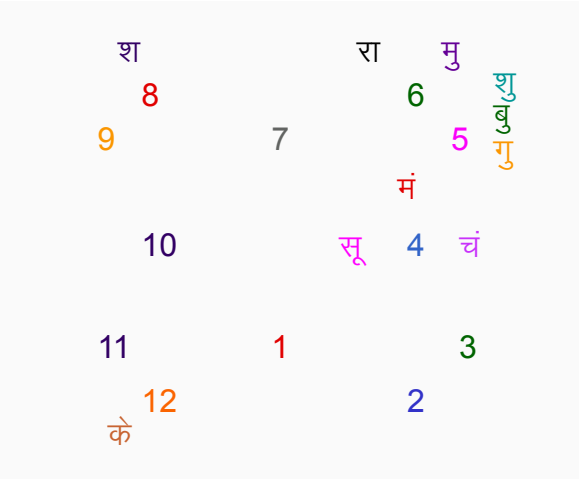

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रूप से व्यतीत होगा। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा आप दुष्ट मनुष्यों की संगति से कष्ट प्राप्त करेंगे।इस समय आप आर्थिक संकट से भी उलझे रहेंगे। अतः मानसिक रूप से भी अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा जिससे शरीर में दुर्बलता रहेगी। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अत्यन्त परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का भी आप यथोचित पूजन तथा सत्कार नहीं करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप हानि प्राप्त करेंगे । इस समय आपके मित्रों तथा बन्धुओं से मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक रूप से व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे । साथ ही शत्रुपक्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे तथा जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी । अतः मानसिक रूप से आप अशान्त रहेंगे।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से लाभ अर्जित करेंगे तथा बुद्धि भी निर्मल रहेगी । साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी। जिसके फलस्वरूप कोई धार्मिक उत्सव सम्पन्न हो सकता है। इस प्रकार यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा।

नवम् मास
13/09/2015 13:08:56 से 14/10/2015 02:42:32 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		वृश्चिक	ज्येष्ठा	27:44:09
सूर्य		सिंह	पू0फाल्गुनी	26:08:06
चन्द्र		सिंह	पू0फाल्गुनी	26:34:09
मंगल		कर्क	आश्लेषा	28:31:08
बुध		कन्या	हस्त	20:52:45
गुरु		सिंह	मघा	13:02:37
शुक्र		कर्क	आश्लेषा	21:13:19
शनि		वृश्चिक	अनुराधा	05:36:02
राहु	व	कन्या	उ0फाल्गुनी	06:53:11
केतु	व	मीन	उ0भाद्रपद	06:53:11
मुंथा		कन्या	उ0फाल्गुनी	08:55:35

मासाधिपति

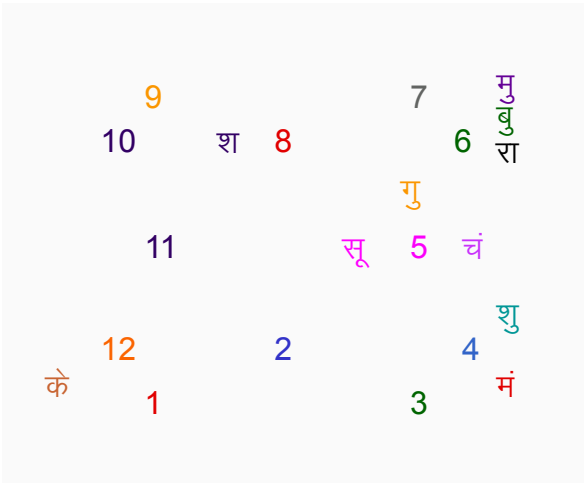

मासाधिपति : मंगल

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ फल दायक रहेगा। इस समय महिला वर्ग से आपको पूर्ण लाभ प्राप्त होगा तथा आपके सौभाग्य में भी आशातीत वृद्धि होगी जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय पर सम्पन्न होंगे।इससे मानसिक रूप से आप पूर्ण शान्ति तथा प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं ज्ञानार्जन के क्षेत्र में आपके मन में उत्सुकता उत्पन्न होगी। आपके मित्र तथा बन्धु जनों से इस समय मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको वांछित सहयोग तथा सहायता प्राप्त होगी।इस समय आपको इच्छित द्रव्यों की भी प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा एवं समाज में भी आप सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके रूके हुए शुभ कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं सुख साधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप रूचिशील रहेंगे एवं समाज तथा बन्धुवर्ग से पूर्ण सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

दशम् मास
14/10/2015 02:42:32 से 13/11/2015 03:57:26 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		सिंह	मघा	01:18:10
सूर्य		कन्या	चित्रा	26:08:06
चन्द्र		तुला	चित्रा	05:42:38
मंगल		सिंह	पू0फाल्गुनी	17:36:33
बुध		कन्या	उ0फाल्गुनी	08:23:03
गुरु		सिंह	पू0फाल्गुनी	19:20:10
शुक्र		सिंह	मघा	10:18:58
शनि		वृश्चिक	अनुराधा	08:06:47
राहु	व	कन्या	उ0फाल्गुनी	06:55:31
केतु	व	मीन	उ0भाद्रपद	06:55:31
मुंथा		कन्या	हस्त	11:25:35

मासाधिपति : बुध

मासाधिपति

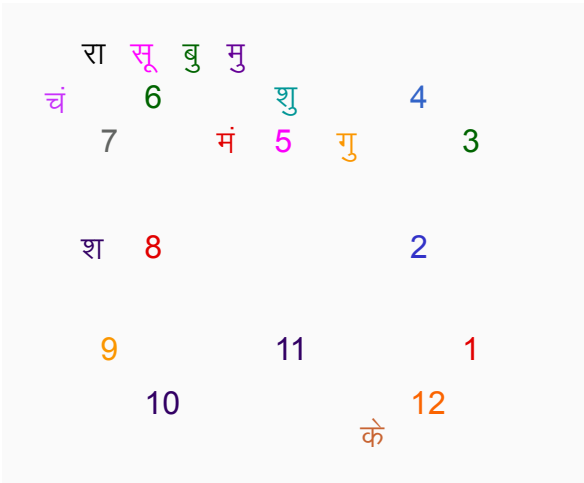

इस माह में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आप अपने उत्साह से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में स क्षम रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आप का यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आप यथोचित सम्मान अर्जित करेंगे एवं उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे।उच्चाधिकारी वर्ग का आपको पूर्ण आश्रय प्राप्त होगा जिससे आप उनसे प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करेंगे।साथ ही इस मास में मिष्ठान्न के प्रति आपके मन में विशेष रूचि रहेगी तथा आप प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न ही रहेंगे।इस मास में आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यो के द्वारा आप लाभ तथा धन अर्जित करने में सफल रहेंगे।

परन्तु शुभ फलों के मध्य यदाकदा इस मास में अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप शीत या वातजनित रोगों से शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आपकी बुद्धि किसी ऐसे कार्य को करने के लिए उद्यत होगी जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा गिरेगी। एवं बाद में इसके लिए आप पछताएंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप किंचित धन हानि प्राप्त करेंगे अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

एकादश मास

13/11/2015 03:57:26 से 12/12/2015 19:31:19 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		कन्या	हस्त	16:44:36
सूर्य		तुला	विशाखा	26:08:06
चन्द्र		वृश्चिक	अनुराधा	09:39:25
मंगल		कन्या	उ0फाल्गुनी	05:56:29
बुध		तुला	विशाखा	23:21:19
गुरु		सिंह	पू0फाल्गुनी	24:33:47
शुक्र		कन्या	हस्त	10:35:42
शनि		वृश्चिक	अनुराधा	11:21:50
राहु	व	कन्या	उ0फाल्गुनी	05:47:13
केतु	व	मीन	उ0भाद्रपद	05:47:13
मुंथा		कन्या	हस्त	13:55:35

मासाधिपति

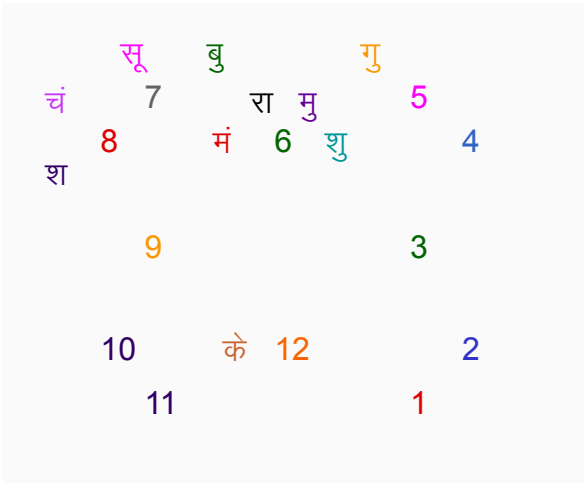

मासाधिपति : गुरु

यह मास आपके लिए सामान्य रूप से ही शुभ फलदायक रहेगा तथा अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा हृदय से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके शत्रु आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आप की आय स्त्रोतों में भी उन्नति होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी आप लाभार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य की भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके विलम्बित कार्य भी इस मास में पूर्ण हो सकेंगे। मित्रों तथा बन्धुवर्ग से आपके संबध मधुर रहेंगे तथा सांसारिक कार्य भी समय पर सम्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथा योग्य सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप वातजन्य रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आप कोई ऐसा कार्य करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में आपकी अवमानना होगी। इसके अतिरिक्त इस मास में अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार क्षति होने की संभावना है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

द्वादश मास
12/12/2015 19:31:19 से 11/01/2016 06:25:10 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		मिथुन	आर्द्रा	17:23:57
सूर्य		वृश्चिक	ज्येष्ठा	26:08:06
चन्द्र		धनु	मूल	09:52:24
मंगल		कन्या	चित्रा	23:27:27
बुध		धनु	मूल	09:43:32
गुरु		सिंह	उ0फाल्गुनी	28:03:10
शुक्र		तुला	स्वाति	14:39:23
शनि		वृश्चिक	अनुराधा	14:51:28
राहु	व	कन्या	उ0फाल्गुनी	02:53:12
केतु	व	मीन	पू0भाद्रपद	02:53:12
मुंथा		कन्या	हस्त	16:25:35

मासाधिपति : गुरु

मासाधिपति

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रु भी आपसे अधिक बलवान होंगे अतः उनकी ओर से आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके व्यापार आदि कार्यो में मन्दी रहेगी तथा नौकरी आदि में भी अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी। साथ ही आप किसी कार्य को परिवर्तन कर सकते है या कोई कार्य छूट भी सकता है। समाज में दूसरे लोगों के साथ आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता परिलक्षित होगी। इसके अतिरिक्त आपके इस मास में धन हानि के योग बनेंगे तथा शरीर किसी नवीन रोग से पीडित हो सकता है। अतः अपने समस्त सांसारिक कार्यो को सोच समझ कर सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगे। इस समय स्त्री तथा पुत्र से आप सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपनी बुद्धिमता से धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा आपके इन विचारों से समाज से आप वांछित सम्मान तथा सहयोग प्राप्त कर सकेंगे।

विशिष्ट उपाय

2015

2016

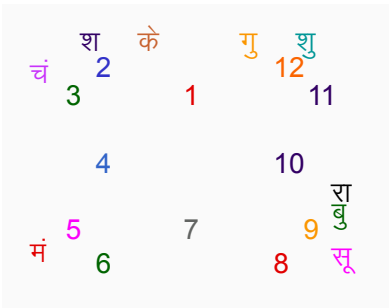

2017

2018

2019

2020

2021

2022

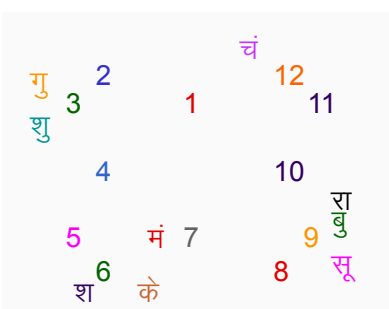

2023

2024

2025

2026

लाल किताब वर्षफल 2015-2016

वर्त्तमान आयु - 41

वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	––	हाँ	––	मन्दा
चंद्र	––	––	––	मन्दा
मंग	––	––	––	नेक
बुध	––	हाँ	––	नेक
गुरु	––	––	––	मन्दा
शुक्र	––	––	––	नेक
शनि	––	––	––	नेक
राहु	––	हाँ	––	मन्दा
केतु	––	––	––	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	––	हाँ	हाँ	––	––	––	––

वर्ष कुंडली 2015 – 2016

वर्ष चन्द्र कुंडली 2015 – 2016

लाल किताब वर्षफल 2015-2016

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं0 6 में है, जिसकी वजह से इस वर्ष आपको अधिक गुस्सा आना आपके लिये हानिकारक है, रघ्चाप घट/बढ़ जाये ऐसी आशंका है, आप आपने पिता या पुत्र के साथ एक ही शहर/गांव/ऑफिस में इकटठे काम नहीं कर सकते। हर समय दूसरों के सहारे या दूसरों के धन पर आस न लगाएं ऐसा करने से आपको लाभ नहीं होगा।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शुद्ध चांदी या गंगा जल घर पर रखें।
2. बंदरों को गुड़ या भुने हुए गेहूँ को गुड़ लगा कर खिलाएं।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं0 12 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके सभी काम तरस–तरस कर बनेंगे, विद्या संबंधी कामों में रूकावट हो सकती है, आपकी बात बदलने की आदत बनेगी, व्यतीत समय की बातें लोगों को सुना कर अपनी बढ़ाई करेंगे। 'अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना' जैसी कहावत आप पर चरितार्थ हो सकती है। मुकददमें में हार का भय रहेगा।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. नीम के वृक्ष का पानी घर में रखें या आसमानी बर्फ (ओले) शीशे के बर्तन में कायम करें।
2. 16 लीटर वर्षा का पानी कनस्तर में भरकर 4 शुद्ध चांदी के चौरस टुकड़े डाल कर रखें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं0 11 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका स्वभाव न्यायप्रिय रहेगा, अपनी किस्मत स्वयं अपने हाथों से बनाएगें, कारोबार में तरक्की होगी, जमीन–जायदाद का लाभ मिलेगा और इस वर्ष आपको सभी सुख–सुविधाएं मिलेंगी। पुत्र–पौत्र का सुख मिलेगा, आपको शत्रुओं से कोई भय नहीं रहेगा या शत्रु भी मित्र बन जायेंगे।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. किसी पर भी भरोसा न करें।
2. कुत्ते को चोट न मारें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं0 6 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष दिमागी कार्यों से लाभ मिलेगा, विदेश भ्रमण की इच्छा भी रहेगी, समुद्री यात्रा से लाभ मिलेगा, कृषि से संबंधित कार्यों से लाभ मिलेगा। वक्तव्य देना, एकाउटेंट/चार्टर्ड एकाउंटेंट, लेखन, प्रिंटिंग से संबंधित कामों से लाभ होगा। मुंह से निकली बात शत प्रतिशत सही हो सकती है। ननिहाल से लाभ मिलेगा।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. लड़की/बहन का विवाह अपने रिहाइशी मकान की उत्तर दिशा में न करें।
2. सेवक/नौकरों पर हमेशा नज़र रखें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं0 10 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या संबंधी कामों से अधिक लाभ नहीं होगा। ख्वाबों के महल बनाना आपकी आदत बनेगी। ख्वाबी महल न बना कर आप समय का सदुपयोग करें। साधू को कष्ट दिया, पीपल का वृक्ष उजाड़ा से तो आपको हानि का मुंह देखना पड़ेगा। संतान की चिंता, पिता–दादा का स्वास्थ्य भी खराब रह सकता है।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गुरु/साधू की सेवा करें या पीपल के वृक्ष को पानी से सींचें (रविवार को छोड़कर) ।
2. तांबे का पैसा 43 दिन लगातार बहते पानी में डालें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं0 10 में शुभ हैं जिसकी वजह से आपकी इस वर्ष कामशक्ति की अधिकता होगी। पत्नी के साथ रहते कभी कोई दुर्घटना नहीं होगी और आपको किसी प्रकार का दुःख नहीं झेलना पड़ेगा। पत्नी का स्वास्थ्य लगभग ठीक रहेगा। आपमें लोभ और शक करने की भावना बढ़ सकती है। दस्तकारी के कामों से अधिक लाभ होगा।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. शराब–बीयर न पियें, मछली न खावें।
2. आशिक मिजाज न बनें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं0 9 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके मन में परोपकार की भावना रहेगी, भाई–बंधुओं का सहयोग मिलेगा। कर्ज का बोझ आप में नहीं रहेगा। पैसे के प्रति आप की दौड़ नहीं रहेगी। पत्नी के नाम पर काम शुरू करने से लाभ होगा, मकान–वाहन का सुख मिलेगा। तीसरा रिहाइशी मकान न बनावें वरना स्वास्थ्य को खतरा होगा।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. दूसरों के माल पर बदनीयत न रखें।
2. घर की छत पर ईंधन–चौगाठ आदि न रखें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं0 6 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष शस्त्र भय है, बिना लाइसेंस का हथियार रखने से आपको दण्ड/जुर्माने का भय है। चाचा से झगड़ा करने पर आपको हानि होगी। निम्न स्तर के लोगों के साथ मित्रता से हानि होगी। आप पर चोरी का लांछन भी लग सकता है। साहूकारी करना या लिखा–पढ़ी के बिना किये कार्यों से लाभ न होगा।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. काला कुत्ता पालें या काले कुत्ते को भोजन का हिस्सा खिलायें।
2. 6 सिक्के (औफदप) की गोलियां पास रखें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं0 9 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष प्रगति मिले ऐसी संभावना है। तबदीली का चांस कम है। यात्रा से लाभ होगा। प्रदेश में भी कुछ समय व्यतीत हो सकता है। अपनी संतान के साथ या उसकी सलाह से कोई काम करेंगे तो आपको अधिक लाभ होगा। आप जिसको पुत्र होने का आशीर्वाद देंगे उसके घर पुत्र पैदा होगा।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चोर–डाकू का साथ न रखें।
2. कुत्ते को चोट न मारे।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

- गुरु–साधू की सेवा करें या पीपल का वृक्ष लगावे।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति–रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख–दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी–नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री मातृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा–दादी, माता–पिता, बहन, बेटी–बुआ, भाई, चाचा–ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर–बराबर वजन में चांदी लेकर उसी दिन दरिया में बहा देवे।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू–टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने–जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने–बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन–दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल–ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षांत में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढि यां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा–दादी, माता–पिता, बहन, बेटी–बुआ, भाई का परिवार चाचा–ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर–बराबर धन लेकर सौ अलग–अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों–करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी–ठगी–गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा–मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी–व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब के उपाय

कब और कैसे करें ?

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई–बहन, माता–पिता, दादा–दादी, पुत्र–पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस–मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल–चलन ठीक र खें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री–परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग–बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40–43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति –रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।